''हरिवंश राय बच्चन कृत 'मधुशाला' एक सामाजिक समरसता का अमृत कलश''

सारांश

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 'मधुशाला' के सामाजिक महत्व और उसके तत्वों का विश्लेषण करना है। हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित यह कविता न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि भारतीय समाज की विविधता और समरसता का प्रतीक भी है। 'मधुशाला' के माध्यम से बच्चन ने शराब, मयखाना, साकी और प्याला जैसे प्रतीकों का उपयोग कर एक समृद्ध सांस्कृतिक संवाद प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में 'मधुशाला' की गहरी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रासंगिकता को उजागर किया गया है, जो विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को समाहित करती है। कविता के विभिन्न पदों और श्लोकों का विश्लेषण करके यह अध्ययन 'मधुशाला' की व्यापकता और इसके माध्यम से प्रस्तुत सामाजिक संदेशों को स्पष्ट करता है। बच्चन की यह रचना एक प्रतीकात्मक यात्रा है, जो जीवन की क्षणभंगुरता, मृत्यु की अनिवार्यता, और समरसता के महत्व को उजागर करती है। 'मधुशाला' की गेयता और इसकी सरल भाषा इसे जन–जन तक पहुंचाती है, जिससे यह एक लोकप्रिय और प्रभावशाली कृति बनती है।

मुख्य शब्द :– मधुशाला, भारतीय समाज, मयखाना, सामाजिक प्रासंगिकता, सांस्कृतिक मान्यता ।

प्रस्तावना

हरिवंशराय बच्चन साहित्यिक आकाश के एक ऐसे तेजस्वी नक्षत्र हैं जिनकी चमक अद्वितीय और अनन्त है। उनकी प्रमुख काव्य कृति 'मधुशाला' को लेकर साहित्य जगत में व्यापक चर्चा और विमर्श हुआ है। बुद्धिजीवियों ने इस कृति पर अनेक विचार व्यक्त किए हैं। 'मधुशाला' की गहरी सामाजिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि उसे एक साधारण कविता से ऊपर उठा देती है। रमा देवी सी. (1988) के अनुसार, ''मधुशाला को केवल मद्य प्रिय कविता कहना न्याय संगत नहीं, इसकी गहरी और व्यापक दार्शनिक पृष्ठभूमि है जिसका मूल्यांकन करना आवश्यक है।''[1]

बच्चन ने मदिरा के विषय को केवल एक उपकरण के रूप में लिया है। वास्तव में उनका लक्ष्य सामाजिक समरसता और एकता का संदेश देना था। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहां जाति, धर्म, भाषा या किसी अन्य प्रकार के भेद मानव एकता के मार्ग में बाधा न बनें। फरहत शबाना (1994) के शब्दों में, ''मधुशाला एक समृद्ध दर्शन प्रस्तुत करती है जिसमें जीवन के सभी पक्षों को शामिल किया गया

[1] रमा देवी सी., बच्चन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां, शोध प्रबंध, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, 1988।

है, विशेषकर धर्म और जाति के आधार पर अलगाव की समस्या को।''[2] तथा मद्य के बहाने बच्चन समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों और विसंगतियों की ओर संकेत करते हैं। वे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों जैसे धार्मिक स्थलों की कटु आलोचना करते हैं जहां जाति और धर्म के आधार पर लोगों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है। सूरी बृजबाला (2012) के अनुसार, ''मंदिर और मस्जिद दोनों ने बच्चन को उनके विचारों के कारण बहिष्कृत कर दिया था लेकिन मधुशाला के भीतर वे मानवता के इस उच्चतम रूप को पाते हैं।''[3]

'मधुशाला' के माध्यम से बच्चन मानव समाज को एकता और सामंजस्य का पाठ पढ़ाते हैं। उनका मानना है कि धर्म, जाति और भाषा जैसी मनुष्य निर्मित बाधाओं से परे उठकर केवल मानव की भावना से ही सच्ची एकता स्थापित हो सकती है। एच.के. शर्मा (2017) के शब्दों में, ''बच्चन की मधुशाला वास्तव में विभाजन और अलगाव से मुक्ति की तलाश में है। यह समानता और भाईचारे के उच्चतम आदर्शों की खोज का प्रतीक है।''[4] इस प्रकार हम देखते हैं कि 'मधुशाला' एक गहरे सामाजिक सन्देश का वाहक है। यह न केवल एक काव्य कृति है बल्कि समाज को एकता और सद्भाव की राह पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने वाला एक दर्शन भी है।

मधुशाला का सामाजिक पृष्ठभूमि

हरिवंश राय बच्चन की काव्य कृति 'मधुशाला' उस समय की रचना थी, जब भारतीय समाज कई सामाजिक और राजनीतिक उथल–पुथल से गुजर रहा था। यह एक ऐसा दौर था जब देश की आजादी की लड़ाई अपने चरम पर थी और समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं ने अपनी गहरी जड़ें जमा ली थीं। इस पृष्ठभूमि में बच्चन जी ने अपनी कलम से समाज की यथार्थ तस्वीर को उकेरा और सामाजिक समरसता के लिए एक मजबूत आवाज बुलंद की। बच्चन जी ने अपनी कविताओं में इसी भावना को व्यक्त किया है। उन्होंने लोगों को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त होने और आत्मसम्मान के साथ जीने के लिए प्रेरित किया। उनकी कविताएं स्वतंत्रता आंदोलन की गूंज थीं, जो सामाजिक न्याय और समानता की मांग करती थीं।

भारतीय समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था और धार्मिक विभेद ने भी बच्चन जी के काव्य को गहरे तौर पर प्रभावित किया। उस समय जाति आधारित भेदभाव और छुआछूत की समस्या बहुत गंभीर थी, जिससे समाज में घृणा और विभाजन फैला हुआ था। इसके अलावा, धार्मिक विभेद ने भी लोगों को आपस में लड़ाया और साम्प्रदायिक दंगों को जन्म दिया। बच्चन जी ने इन समस्याओं को गहरी संवेदनशीलता के साथ देखा और उनकी कविताओं में इन विषयों को उठाया गया। उन्होंने जाति प्रथा और धार्मिक कट्टरता

[2] फरहत शबाना, छायावादोत्तर हिंदी गीतिकाव्य में हरिवंशराय बच्चन का योगदान, शोध प्रबंध, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, 1994।
[3] सूरी बृजबाला, हरिवंशराय बच्चन के काव्य का श्हालावादश के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन, शोध प्रबंध, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, 2012।
[4] शर्मा एच.के., हालावाद और बच्चन, ब्लॉग, मार्च 2017।

की कड़ी आलोचना की और लोगों से एकता और समरसता के साथ रहने का आह्वान किया। उनकी कविताएं जाति और धर्म से ऊपर उठकर मानवता के सार को समझने का संदेश देती हैं।

बच्चन जी ने इन समस्याओं को गहराई से महसूस किया और अपनी कविताओं में इन्हें उजागर किया। उन्होंने गरीबों और शोषित लोगों के दुख और पीड़ा को बखूबी अभिव्यक्त किया, और उनकी आवाज बनकर समाज से उनके लिए न्याय की मांग की। उनकी कविताएं गरीबी और शोषण के खिलाफ एक मजबूत विरोध थीं, जो समाज को इन समस्याओं के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मधुशाला में समाज की विविधता को स्वीकारना

भारत एक बहु–धर्म, बहु–जाति और बहु–संस्कृतिक देश है। हरिवंश राय बच्चन ने अपनी महान काव्य कृति श्मधुशालाश में इस विविधता को स्वीकार और सराहा है। उनकी कविताओं में विभिन्न धर्मों, जातियों, संस्कृतियों और परंपराओं के सुंदर चित्रण मिलते हैं, जिनमें वे इनकी विशेषताओं और सौंदर्य को उजागर करते हैं। साथ ही, बच्चन जी इस विविधता को एकता और समरसता के सूत्र में पिरोते हैं, जिससे समाज में सद्भाव और आपसी सम्मान की भावना बनी रहे। इस प्रकार, मधुशाला भारतीय समाज की विविधता को न केवल स्वीकारती है, बल्कि उसे एक शक्तिशाली कड़ी के रूप में भी प्रस्तुत करती है।

धार्मिक विभाजनवाद की आलोचना

'मधुशाला' के केंद्रीय विषयों में से एक संगठित धर्मों की विभाजनकारी प्रकृति की आलोचना है। बच्चन धार्मिक संस्थानों की बुनियादों पर सवाल उठाते हैं जो अलगाव और भेदभाव का प्रचार करते हैं। वे दुःख व्यक्त करते हैं कि मस्जिदें और मंदिर कैसे अलगाव के गढ़ बन गए हैं, और लोगों को उनके विश्वासों या अभ्यासों के आधार पर अस्वीकार कर देते हैं –

'' दुतकारा मस्जिद ने मुझको

कहकर है पीने वाला,

ठुकराया ठाकुरद्वारे ने

देख हथेली पर प्याला''[5]

[5] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 46, 2007 , पृष्ठ – 56।

कवि कहता है कि विभेदकारी सोच रखने वाले इन धार्मिक स्थलों की मुझे चाहत नहीं है। यदि मंदिर और मस्जिद मेरा बहिष्कार करते हैं तो मुझे अफ़सोस नहीं है। मधुशाला के समक्ष ये फीके हैं –

''मुझे ठहरने का हे मित्रो

कष्ट नहीं कुछ भी होता

मिले न मंदिर, मिले न मस्जिद

मिल जाती है मधुशाला ।''[6]

मस्जिद और मधुशाला की तुलना नहीं हो सकती है। मस्जिद में निश्चित समय के बाद वीरानी छा जाती है। इसलिए बच्चन ने मस्जिद को विधवा कहा है। दूसरी ओर मधुशाला में सदा महफिल सजती है –

''शेख, कहाँ तुलना हो सकती

मस्जिद की मदिरालय से,

चिर– विधवा है मस्जिद तेरी

सदा सुहागिन मधुशाला।''[7]

बच्चे का मानना है कि हिंदू और मुसलमान का भेद मंदिर–मस्जिद के कारण होता है। उनके प्रभाव के कारण दोनों धर्मों में वैमनस्य बना रहता है। लेकिन, मधुशाला सामाजिक भाईचारे का पाठ पढ़ाती है। मधुशाला में आकर मनुष्य हिंदू या मुसलमान नहीं अपितु मनुष्य रहता है। शत्रु की अपेक्षा सच्चा साथी बन जाता है। वर्तमान में जब हिंदू और मुसलमान एक–दूसरे को शंका की दृष्टि से देखते हैं तो 'मधुशाला' सामाजिक समरसता का अचूक उपचार प्रदान करती है–

मुसलमान औ हिंदू हैं दो

एक, मगर उनका प्याला

एक मगर उनका मदिरालय

एक, मगर उनकी हाला

[6] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 47, 2007 , पृष्ठ – 57।
[7] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 48, 2007, पृष्ठ – 58।

दोनों रहते एक न जब तक

मस्जिद मंदिर में जाते

बैर बढ़ाते मस्जिद – मंदिर

मेल कराती मधुशाला।[8]

'मधुशाला' का इतना अधिक प्रभाव होता है कि कट्टर ब्राह्मण अथवा नमाजी में द्वेष की भावना सदा के लिए समाप्त हो जाती है। मधुशाला का इनके प्रति व्यवहार, मित्रवत रहता है–

कोई भी हो शेख नमाजी

या पंडित जपता माला

बैर भाव चाहे जितना हो

मदिरा से रखने वाला

एक बार बस मधुशाला के

आगे से होकर निकले,

देखूं कैसे धाम न लेती

दामन उसका मधुशाला।[9]

मनुष्य ने अहंकार के वश होकर अलग–अलग पंथ खड़े कर लिए हैं। पर एक दिन उसे अवश्य समझ में आएगा और मधुशाला की महत्ता को समझेगा। उसके बाद मेरा व तेरा का भेद मिट जाएगा। मानव बस मानव रहेगा। धर्म के आधार पर बना अस्तित्व मानवता में परिवर्तित हो जाएगा –

आज करे परहेज जगत, पर

कल पीनी होगी हाला

आज करे इनकार जगत, पर

[8] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 50, 2007 , पृष्ठ – 60।
[9] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 51, 2007 , पृष्ठ – 61।

कल पीना होगा प्याला

होने दो पैदा मद का महमूद

जगत में कोई फिर

जहाँ अभी है मंदिर–मस्जिद

वहाँ बनेगी मधुशाला।[10]

बच्चन कहते हैं कि यह कैसी विडंबना है कि मनुष्य पहले तो अपने – अपने पंथों का निर्माण करता है और उसके बाद एकता और भाईचारे का संदेश बाँटता है। इस प्रकार की झूठ तो कभी न कभी पकड़ी ही जाती है। पंथों के स्वामियों से कोई यह पूछे कि तुम एकता का संदेश कैसे दे सकते हो, तुमने तो विभाजित होने के लिए ही अलग पंथ का निर्माण किया था तुम्हारी नीयत और नीति विभाजनकारी हैं। समाज को जोड़ने व सुधारने का कार्य तो मधुशाला ही करती है। मधुशाला में कोई छुआछूत नहीं है, सब एक है–

कभी नहीं सुन पड़ता, इसने

हाँ, छू दी मेरी हाला

कभी न कोई कहता, उसने

जूठा कर डाला प्याला

सभी जाति के लोग यहाँ पर

साथ बैठकर पीते हैं

सौ सुधारकों का करती है।

काम अकेली मधुशाला ।।[11]

इसलिए, हे मनुष्य! जो धर्म के ठेकेदार, तुझे ईश्वर का भय दिखाकर तुझमें भेद करते हैं, ऐसे ठेकेदारों को त्याग दे, क्योंकिइ –

[10] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 53, 2007 , पृष्ठ – 63।
[11] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 57, 2007 , पृष्ठ – 67।

व्यर्थ बन जाते हो हरिजन

तुम तो मधुजन ही अच्छे

ठुकराते हरि–मंदिरवाले,

पलक बिछाती मधुशाला।[12]

मधुशाला केवल पंथ–भेद का ही निवारण नहीं करती अपितु अमीर–गरीब के भेद को भी मिटा देती है–

रंक– राव में भेद हुआ है।

कभी नहीं मदिरालय में

साम्यवाद की प्रथम प्रचारक है

यह मेरी मधुशाला ।।[13]

कवि कहता है कि जीवन स्पर्धा नहीं है। सामाजिक समरसता के लिए अतिक्रमण का निषेध आवश्यक है। दूसरों को व्यथित करके सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। किसी का हक छीनने की अपेक्षा सम्मान करना होगा–

नहीं चाहता, आगे बढ़कर

छीनूं औरों का प्याला

नहीं चाहता धक्के देकर

छीनूं औरों का प्याला ।।[14]

बच्चन को पीड़ा है कि हमने स्वार्थवश सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ दिया है। धर्म, जाति व भाषा के नाम पर लड़ते देखकर कवि के मन में टीस उभर जाती है –

फिर भी वृद्धों से जब पूछा

[12] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 58, 2007 , पृष्ठ – 68।
[13] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 59, 2007 , पृष्ठ – 69।
[14] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 104, 2007 , पृष्ठ – 114।

एक यही उत्तर पाया

अब न रहे वे पीनेवाले

अब न रही वह मधुशाला ।।[15]

सामाजिक सौहार्द और समरसता का आह्वान करते–करते श्मधुशालाश विश्व कल्याण की कामना करती है। अब सीमाओं के लिए युद्ध न हों। नस्लीय हिंसा समाप्त हो । मज़हबी आतंकवाद का नाश हो। एक ऐसे विश्व का निर्माण हो जहाँ मनुष्य का मनुष्य से प्रेम व भाईचारे का संबंध हो जहाँ सभी को समान अवसर मिले तथा सभी की आवाज सुनी जाए –

विश्व, तुम्हारे विषमय जीवन

में ला पाएगी हाला,

यदि थोड़ी–सी भी यह मेरी

मदमाती साकी बाला

शून्य तुम्हारी घड़ियाँ कुछ भी

यदि यह गुंजित कर पाई

जन्म सफल समझेगी जग में

अपना मेरी मधुशाला

जग में मेरी मधुशाला।[16]

निष्कर्ष

संस्कृत साहित्य और भारतीय काव्य परंपरा में हरिवंश राय बच्चन की कृति 'मधुशाला' एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस काव्य ने न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी विशेष पहचान बनाई है। 'मधुशाला' की रचना 1935 में हुई थी, और तब से यह काव्य अपनी अद्वितीयता और प्रभाव के कारण आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। 'मधुशाला' में बच्चन जी ने शराब के प्रतीक का

[15] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 125, 2007 , पृष्ठ – 135।
[16] हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 134, 2007 , पृष्ठ – 144।

उपयोग कर जीवन की विभिन्न सच्चाइयों और संघर्षों को बखूबी दर्शाया है। शराब, हाला, साकी और प्याला के प्रतीकों के माध्यम से कवि ने जीवन के विविध पहलुओं को सरल और सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। इस काव्य में न केवल प्रेम और विरह की बातें हैं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच व्याप्त भेदभाव, संघर्ष और एकता का संदेश भी छिपा हुआ है। हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' ने समाज के विभिन्न तबकों को जोड़ने का काम किया है। यह काव्य एक ऐसा माध्यम बना जिसने भिन्न–भिन्न धर्म, जाति और समाज के लोगों को एक साथ लाकर एकता का संदेश दिया। 'मधुशाला' ने दिखाया कि समाज में चाहे कितनी भी विविधता क्यों न हो, अंततः सभी इंसान समान हैं और उन्हें समान दृष्टि से देखा जाना चाहिए। बच्चन जी ने अपने काव्य में उन रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों का भी विरोध किया है जो समाज को बाँटने का काम करती हैं। इस काव्य की एक विशेषता यह भी है कि इसमें जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। 'मधुशाला' के माध्यम से बच्चन जी ने यह संदेश दिया कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं, हमें उन्हें हंसते–हंसते स्वीकार करना चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए। इस काव्य में जीवन की नश्वरता के प्रति भी जागरूकता है, लेकिन इसके साथ ही यह प्रेरणा भी है कि हमें अपने जीवन को एक उत्सव की तरह जीना चाहिए।

'मधुशाला' में प्रयुक्त प्रतीक और बिंब अत्यंत प्रभावशाली हैं। कवि ने सरल शब्दों में गहरी बातें कही हैं, जो सीधे ह्रदय में उतर जाती हैं। इसका एक उदाहरण है :–

"मुसलमान और हिन्दू है दो, एक मगर उनका प्याला, एक मगर उनका मदिरालय, एक मगर उनकी हाला, दोनों रहते एक न जब तक, मन्दिर–मस्जिद में जाते, बैर बढ़ाते मन्दिर मस्जिद, मेल कराती मधुशाला।"

यह श्लोक समाज में व्याप्त धार्मिक भेदभाव को मिटाने का संदेश देता है और एकता की भावना को प्रबल करता है। इस प्रकार, 'मधुशाला' ने न केवल साहित्यिक बल्कि सामाजिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अंत में, हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' केवल एक काव्य रचना नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की एक अमूल्य धरोहर है। यह काव्य हमें जीवन जीने की कला सिखाता है, समाज में एकता और सद्भाव का संदेश देता है, और हमें प्रेरित करता है कि हम जीवन की कठिनाइयों को हंसते–हंसते स्वीकार करें। 'मधुशाला' के माध्यम से बच्चन जी ने जो संदेश दिया है, वह सदियों तक प्रासंगिक रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। 'मधुशाला' की इसी व्यापकता और गहराई के कारण यह काव्य भारतीय साहित्य के आकाश में एक चमकता सितारा है, जो अपनी रोशनी से सभी को आलोकित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- रमा देवी सी., बच्चन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां, शोध प्रबंध, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, 1988।
- फरहत शबाना, छायावादोत्तर हिंदी गीतिकाव्य में हरिवंशराय बच्चन का योगदान, शोध प्रबंध, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, 1994।
- सूरी बृजबाला, हरिवंशराय बच्चन के काव्य का श्हालावादश के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन, शोध प्रबंध, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, 2012।
- शर्मा एच.के., हालावाद और बच्चन, ब्लॉग, मार्च 2017।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 46, 2007 , पृष्ठ – 56।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 47, 2007 , पृष्ठ – 57।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 48, 2007, पृष्ठ – 58।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 50, 2007 , पृष्ठ – 60।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 51, 2007 , पृष्ठ – 61।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 53, 2007 , पृष्ठ – 63।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 57, 2007 , पृष्ठ – 67।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 58, 2007 , पृष्ठ – 68।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 59, 2007 , पृष्ठ – 69।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 104, 2007 , पृष्ठ – 114।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 125, 2007 , पृष्ठ – 135।
- हरिवंशराय बच्चन , ''मधुशाला'' हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, रुबाई 134, 2007 , पृष्ठ – 144।